श्री कामेश्वर सिंह "सहायक प्रोफेसर"
विषय :- राजनीति विज्ञान ; रोहतास महिला कालेज सासाराम।
पत्र — बी०ए० पार्ट — III 'प्रतिष्ठा' ; VI पत्र (छः)
यूनिट नं० — 22 ; राजनीतिक विचारक
डा० पुखराज जैन एवं डा० बी०एल० फाड़िया।
दिनांक — 11-05-2020

अरस्तू द्वारा क्रान्ति के कारण के शेष भाग

(3) विभिन्न शासन प्रणालियों में क्रान्ति के विशिष्ट कारण :—

क्रान्ति के विशिष्ट कारणों की मीमांसा करने के बाद अरस्तू ने विभिन्न शासन प्रणालियों में होने वाली क्रान्तियों के कारणों का उल्लेख किया है।

(1) **प्रजातंत्र** :— अरस्तू ने प्रजातंत्र को आंशिक न्याय पर आधारित संविधान माना है। प्रजातंत्र में जिनके हाथ में राज्य शक्ति निहित रहती है वे कानून की महत्ता की जगह पर जनता की सर्वोच्चता स्थापित करने को उत्सुक होते हैं। सम्पूर्ण अर्थ में समानता की भूख ही प्रजातंत्र में क्रान्ति पैदा करने वाला एक प्रमुख कारण है। इसके अलावा नायकों के उच्छृंखल व्यवहार भी प्रजातंत्र में होने वाली क्रान्ति के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेवार है।

(2) **धनिकतंत्र** :— प्रजातंत्र की तरह धनतंत्र को भी अरस्तू ने आंशिक न्याय पर आधारित माना है। शासकों द्वारा सर्वसाधारण के साथ अन्याय करना धनतंत्र में क्रान्तियों का प्रमुख कारण है। धनतंत्र में क्रान्ति का दूसरा कारण स्वयं शासक वर्ग में फूट का होना है। धनतंत्र में जब शासकवर्ग के लोग फिजूल खर्ची द्वारा सम्पूर्ण सम्पत्ति को समाप्त कर बैठते हैं तो उनकी मनोकामना क्रान्ति के माध्यम से निरंकुश बनने की हो जाती है। कभी-कभी युद्धकाल में शासक वेतनभोगी सैनिक संचालक की नियुक्ति करते हैं या किसी एक सेनापति के

नेतृत्व में विरोधियों की सेना का संगठन किया जाता है तथा क्रान्ति एवं सुरक्षा का कार्य विदेशी सैनिकों को दे दिया जाता है तो धनतंत्र में क्रान्ति पैदा हो जाती है। धनतंत्र में सम्पत्ति के आधार पर ही मतदान का अब निर्धारण किया जाता है और आर्थिक समृद्धि के कारण ही मतदाताओं की संख्या में भारी वृद्धि हो जाती है तो उसके परिणामस्वरूप भी क्रान्ति देखने को मिलती है।

(3) कुलीनतंत्र :— कुलीनतंत्र में क्रान्तियों का सामान्य कारण शासक वर्ग को संकुचित और सीमित कर देने की नीति है। यह स्थिति और भी बढ़ जाती है जब कुलीनतंत्र में शासक वर्ग की अवैध सम्पत्तियों की वृद्धि हो जाती है। जब प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों के साथ अपमानजनक व्यवहार किया जाता है, तब भी क्रान्ति का अवसर उपस्थित हो जाता है जब शासक वर्ग का एक अंश किसी कारणवश दरिद्र हो जाता है और दूसरा अंश अमीर ही रहता है तो ऐसी स्थिति में भी सम्पत्ति के विभाजन के प्रश्न को लेकर क्रान्ति हो जाती है। कुलीनतंत्र का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह नैतिकता के गुण की अपेक्षा जन्म और धन पर अधिक बल देता है।

(4) राजतंत्र :— अरस्तू का कहना है कि राजतंत्र में क्रान्ति का मुख्य कारण बाहरी आक्रमण नहीं है, बल्कि आन्तरिक द्रोह ही इसकी क्रान्ति का मुख्य कारण है। राजतंत्र में क्रान्ति की स्थिति तब पैदा होती है जब राज परिवार में पारस्परिक कलह होता है तथा राजा निरंकुश

शासन का प्रसार करता है। राजा के कर्मचारीगण अपने गलत व्यवहारों से भी लोगों के घृणा और द्वेष उत्पन्न करते हैं, जिससे भी क्रान्ति की सम्भावना बढ़ जाती है।

⑤ **अत्याचार-तंत्र :**

अत्याचार-तंत्र में क्रान्ति उत्पन्न करने के अनेक विपरीत प्रकार के पड़ोसी राज्य का द्वारा सबसे अधिक होता है। अत्याचार-तंत्र के विरुद्ध राजा के अपमानजनक और उत्पीड़क व्यवहार के विरुद्ध लोग उनसे घृणा करने लगते हैं जिसके परिणाम-स्वरूप होता है क्रान्ति। अपने सम्बन्धियों के साथ ही मौन सम्बन्ध, स्थापित करना तो इसे संविधान के लिए सबसे बड़ा घातक सिद्ध होता है। आन्तरिक कलह और विद्रोह भी अत्याचार-तंत्र को नष्ट करने में सहायक होते हैं।

अतः उपर्युक्त दिये गये कारण ही विभिन्न शासन प्रणाली में क्रान्ति के कारण बनते हैं।